

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 25 August 2026

नासा का बड़ा अपडेट : 100 फीट चौड़ी उल्का '2025 QV9' धरती के पास से गुजरेगी, खतरे की आशंका नहीं

Publisher

Published on 09 Sep 2025



अंतरिक्ष अनुसंधान से जुड़ी विश्व की अग्रणी संस्था **नासा (NASA)** ने एक महत्वपूर्ण अपडेट साझा किया है। नासा के अनुसार, लगभग **100 फीट चौड़ी उल्का "2025 QV9"** धरती के करीब से गुजरेगी। यह घटना **10 सितंबर 2025** को होने वाली है। उल्का की गति करीब **10,000 मील प्रति घंटा** (लगभग 16,000 किलोमीटर प्रति घंटा) है। हालांकि, नासा ने साफ किया है कि इस उल्का के धरती से टकराने का **कोई खतरा नहीं** है।

"2025 QV9" एक **Near-Earth Object (NEO)** है, जिसे कुछ महीने पहले खोजा गया था। वैज्ञानिकों ने इसकी कक्षा का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि यह उल्का धरती से **करीब 30 लाख किलोमीटर की दूरी** से गुजरेगा। खगोल विज्ञान की दृष्टि से यह दूरी बहुत कम मानी जाती है, लेकिन यह अभी भी धरती के लिए पूरी तरह सुरक्षित है।

नासा के विशेषज्ञों के अनुसार, इस उल्का की **कक्षा स्थिर** है और इसके धरती की सतह से टकराने की संभावना बिल्कुल नहीं है। उल्का के धरती के पास से गुजरने से न तो पृथ्वी के वायुमंडल पर कोई असर पड़ेगा और न ही जीवन पर।

हालांकि, वैज्ञानिक इस घटना पर करीबी नजर रखेंगे ताकि भविष्य में अंतरिक्षीय वस्तुओं की ट्रैकिंग और सटीक जानकारी देने की क्षमता और बेहतर हो सके।

क्यों खास है यह घटना ?

- साइज़ और स्पीड:** यह उल्का लगभग 100 फीट चौड़ा है और 10,000 मील प्रति घंटे की रफ्तार से यात्रा कर रहा है।
- धरती के पास से गुजरना:** इतनी कम दूरी से किसी बड़े उल्का का गुजरना हमेशा वैज्ञानिकों के लिए शोध का विषय रहता है।

3. वैज्ञानिक अध्ययन का अवसर: खगोल वैज्ञानिक इस मौके का इस्तेमाल करके उल्का की सतह, गति और संरचना का अध्ययन करेंगे।

धरती के इतिहास में कई बार बड़े उल्कापिंडों के टकराने की घटनाएँ दर्ज की गई हैं। करीब **6.5 करोड़ साल पहले** एक विशाल उल्कापिंड के धरती से टकराने की वजह से डायनासोर प्रजाति का अंत हुआ था। हालांकि, आधुनिक समय में नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियाँ **Near-Earth Objects (NEOs)** पर लगातार नजर रखती हैं ताकि किसी संभावित खतरे से बचाव किया जा सके।

नासा ने “Planetary Defense Coordination Office (PDCO)” स्थापित किया है, जिसका काम है **उल्कापिंडों और धूमकेतुओं की निगरानी करना**। इसके लिए खास टेलिस्कोप और सैटेलाइट का इस्तेमाल किया जाता है। “2025 QV9” जैसे उल्काओं की गति, दिशा और कक्षा का अध्ययन कर समय से पहले रिपोर्ट तैयार की जाती है। भविष्य में अगर किसी उल्का के धरती से टकराने की संभावना बनी, तो वैज्ञानिक उसके लिए बचाव की योजना भी बना सकते हैं।

नासा ने कहा है कि सोशल मीडिया पर इस खबर को लेकर फैली अफवाहों से लोगों को डरने की जरूरत नहीं है। “2025 QV9” धरती से टकराने वाला नहीं है। बल्कि यह घटना अंतरिक्ष प्रेमियों और वैज्ञानिकों के लिए **रोमांचक अनुभव** होगी।

भारत के वैज्ञानिकों ने भी नासा की इस रिपोर्ट की पुष्टि की है। **इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (ISRO)** के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा:

“*2025 QV9 एक उल्कापिंड है जो 2025 में धरती के पास से गुजरना है। यह एक रोचक खगोलीय घटना है, लेकिन इससे किसी भी तरह का खतरा नहीं है। नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियाँ इस पर करीबी नजर बनाए हुए हैं। यह घटना वैज्ञानिकों को अंतरिक्षीय पिंडों के अध्ययन और भविष्य की सुरक्षा रणनीतियों को और मजबूत करने का अवसर देगी।*”

उल्का “2025 QV9” का धरती के पास से गुजरना एक **रोचक खगोलीय घटना** है, लेकिन इससे किसी भी तरह का खतरा नहीं है। नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियाँ इस पर करीबी नजर बनाए हुए हैं। यह घटना वैज्ञानिकों को अंतरिक्षीय पिंडों के अध्ययन और भविष्य की सुरक्षा रणनीतियों को और मजबूत करने का अवसर देगी।